

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-6

गङ्गाजिनी १

रुंनमणीवकसम्ब्राय॥ प्रागरेववि॥ गङ्गाजिनीउद्वकदाथधवियाकम
लकसिमंसंगुवावृत्ररुमत्रकलिकुठानमिसवावृक्तद्वोंगकल्यावृ
व॥ ॥ श्रीसम्ब्रायावाचुविमुक्तजंगुवावृत्रमासयिप्रवायियावृत्र
मायासदकसकात्रवृक्तसिना॥ ॥ याधवृक्तमूदकदादमदाथध
वियाउजवृत्रिप्रमासा२नीसादिकवादिककलंकाययिप्रउमस्वभूतिविकला

१

शुद्धशुद्ध

वृत्र॥ ॥ आसिरुयथाहवृत्रवाययिप्रवृत्रकासिसाभूतिदिनमूदा२विष्ण
कसिमंसद्वन्द्वकठारुग्यायप्रमठमूदा॥ ॥ कृमिसंविनंविप्रवृत्र
नायक विनिवृक्तमदाविनंविना२कवृषणृगाप्रविनंवीप्रवृत्रनरु ऊयिस
यप्रसंसावृत्र॥ १ ॥ ॥ प्रागणृगाप्रमासणी॥ धाउगागुरुत्रुमस्ववि
नमं२नीसवृत्रुत्रुयादयिगलकभा॥ ॥ गनाद्वंद्वगनाद्वंद्वगनाद्वंद्व

श्रीदिगम्बर

[illegible]

दनी॥ ॥ रुचनमदाकात्रगलयनिकुमान् विसदुगया लज्जदुदनी
युक्तिया लममभूतिवसिन्धुधिया श्रीसधिकागिनीमागिगना २ श्रीदुरुवनशीभू
दुष्मभानरुक्तयुक्तयिभानगना॥ ॥ यन्निमदिर्गंवनकासाकृष्णभान
दवीलूद्यायनीगकवाहनी २ दक्षिणदिर्गंवनकलंकृष्णभान दवीवात्रादि
महिषासनी॥ ॥ भूनादिर्गंवनभूददाभान दवीकामात्रीमयूना

सना नमस्तुदिगांजन सक्तीवर्धन भान दतीविष्णुविग नृणां सनी ॥
 वायुस्तुदिगांजन धा लां धन भान दती ताम्रं भु मदा सनी २०० ॥ ६ ॥
 किसिक भान दती मदा लक्ष्मी सिंहा सनी ॥ ३ ॥ ॥ प्रागनाम ॥ ६ ॥
 चाति च वत्त वायु यि व उ मा ला २ ॥ आथ व द न य मि मु ख नि न य ना ॥
 ना व यि द न व र्ने वा मा द ती स दि गा २ ॥ मू ष्ठ या नि नी ल या य व म न या न्ता ॥

3

[illegible]

अथ

यनद्विस्वहिकसंलग्नयागवत्तुध्वनिविरुत्तननाथा॥

॥ हनिहयवं

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ विविधिनयन

मोक्ष संकमददाऽङ्गमकविवाङ्मिह वस्य सयदा ॥ ५ ॥

五

॥ अहयसवेराव तिश्च नय २ किरुवनया पिरुमानन्द ॥

नात्रयिदृशीषहृकसमप्रशानतिनासामानिगता॥

॥ वज्रसूत्रम् ॥

सुमन्त्रिन

वृषद्वौलश्वभयाभक्तनिधया ॥

॥ सूर्यासनयजिआनिकालिः ॥

उरुवसदजानंदय॥

॥ सकृद्युन्नयनलामिल्यंगकधायारगक्षानंद

यन्मासध्वजा ॥ ३ ॥

॥ जगमधुमन्का ॥ यमुदिकम्पादिदधकमि

सुसमनमममसुसमनसि मययना २ द्वादश रुद्र उग्रदनममारा

वज्रनादिकल्लभसिगना॥

॥ द्रुद्रुद्रदहादहुरुनमाजसयसम

वाधिया २२६ दआसिंगलम २२६ मकावना सयिदान संवल साया ॥
 कलिमयलृगऊनमणिमूलक सकिउम वृष्टुं साहिका २२६ य पूसिमक ॥
 त्यासखद्वींगया मयवृष्टुवंकमिखंगधला ॥ ॥ यंत्रजिनवृष्टुमका
 ठआलंककमखठमूदाआरुवृष्टुविरुषिका २२६ सासिका सिद्धि सा निधवा
 ययि वाधयनमनिमसनकसुमनू ॥ ॥ नवमिसमासा वृष्टुमीस

५

२२६ मकावना

मवदिया २२६ निमिक् वृद्धिया २२६ सऊममा वृष्टुकायायस २२६ मवक्रियन
 मादितकगीमा ॥ १ ॥ ॥ वागससिम ॥ उलगमरुवृष्टुमकावृष्टुमका
 मका २२६ निवृद्धिमियिंगलकम ॥ ॥ ऊगऊनकयकयागुष्टुमका
 वी २२६ समावृष्टुमका निदवी ॥ २ ॥ ॥ वृकनयनमिनि वृष्टुमासा २२६
 मकावृष्टुमका वृष्टुमका निदवी ॥ ॥ वाधयनमवृष्टुमका २२६

समादयभवाकान् ॥

॥ चयनसवत्तथीउदमाचूलीमामारुनयिम् ॥

माद्यतकचसिमणीका ॥

८

॥

धरत्त बजाचार्य सुरत श्री महाविहार

II-6